Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ करवा चौथ पूजा विधि एवं सामग्री ॥

॥ ॐ उमायै नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ करवा चौथ पूजा सामग्री ॥

करवा चौथ के पूजन में माता गौरी या चौथ माता और शिव परिवार की आराधना की जाती है। पूजा की तैयारी पहले कर लें, ताकि संध्या के समय शांत मन से पूजन और कथा-पाठ हो सके। नीचे सामान्य घरेलू पूजा की सामग्री दी गई है।

पूजा स्थल और देव-प्रतिमा

एक स्वच्छ चौकी, चौकी पर बिछाने के लिए साफ वस्त्र, बैठने का आसन तथा चौथ माता या गौरी-शिव परिवार का चित्र अथवा पूजा कैलेंडर रखें। घर की परंपरा में गौरी की मिट्टी की प्रतिमा बनाई जाती हो तो उसकी तैयारी कर लें।

पूजन और अर्घ्य की सामग्री

करवा, लोटा, स्वच्छ जल, पूजा की थाली, रोली या कुमकुम, अक्षत, मौली, पुष्प, दीपक, बाती, घी या तेल, धूप और माचिस रखें। करवा मिट्टी या धातु का हो सकता है। छलनी का उपयोग आपके परिवार में होता हो तो उसे भी साथ रखें।

भोग, श्रृंगार और भेंट

फल, मिठाई तथा परंपरा के अनुसार पकवान रखें। चुनरी, सिंदूर, चूड़ियाँ, मेहंदी और अन्य सुहाग-सामग्री इच्छानुसार तैयार करें। कथा सुनते समय उपयोग होने वाले गेहूँ या चावल तथा बायना या दक्षिणा घर की रीति के अनुसार रखें।

सामग्री की संख्या, करवे की सजावट और बायने की वस्तुएँ परिवार व क्षेत्र के अनुसार बदलती हैं। हर सूची को सभी के लिए अनिवार्य न मानें।

॥ प्रातः तैयारी एवं संध्या पूजन ॥

१. सरगी और व्रत का संकल्प

जहाँ सरगी की परंपरा हो, वहाँ उसे सूर्योदय से पहले ग्रहण किया जाता है। प्रातः स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें। माता गौरी का स्मरण करते हुए पति और परिवार के मंगल की कामना से अपनी क्षमता के अनुसार व्रत का संकल्प लें।

२. पूजा की चौकी सजाएँ

संध्या पूजन से पहले स्थान साफ करें। चौकी पर वस्त्र बिछाकर चौथ माता या गौरी-शिव परिवार का चित्र स्थापित करें। करवा और पूजा की थाली पास रखें। दीपक सुरक्षित स्थान पर जलाएँ और सभी सामग्री व्यवस्थित कर लें।

३. श्रद्धापूर्वक पूजन करें

श्री गणेश का स्मरण करके पूजन आरंभ करें। माता गौरी या चौथ माता, भगवान शिव, श्री गणेश और भगवान कार्तिकेय को प्रणाम करें। घर की रीति के अनुसार रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पित करें। माता को सुहाग-सामग्री चढ़ाने की परंपरा हो तो उसे भी अर्पित करें।

४. सरल प्रार्थना

हे माता गौरी! हम सब पर कृपा करें। हमारे दांपत्य में प्रेम, विश्वास और परस्पर सम्मान बना रहे। परिवार के सभी सदस्यों को सुख, शांति और मंगल का आशीर्वाद दें।

॥ ॐ उमायै नमः ॥

॥ कथा, चंद्र अर्घ्य एवं पारण ॥

५. कथा-पाठ और आरती

पूजन के साथ करवा चौथ की कथा पढ़ें या सुनें। कथा के दौरान हाथ में गेहूँ अथवा अक्षत रखने और थाली फेरने की रीति हो तो उसी का पालन करें। कथा के बाद आरती और प्रार्थना करें। घर के बड़ों से आशीर्वाद लें तथा परंपरानुसार बायना या भेंट दें।

६. चंद्रमा को अर्घ्य दें

अपने स्थान पर चंद्रमा के उदय के बाद सुरक्षित और खुले स्थान से दर्शन करें। लोटे या करवे के स्वच्छ जल से श्रद्धापूर्वक अर्घ्य दें। चंद्रदेव को प्रणाम करके परिवार के मंगल की कामना करें। छलनी से चंद्रमा तथा फिर पति का मुख देखने की रस्म कई परिवारों में प्रचलित है।

७. व्रत का पारण

अर्घ्य और प्रार्थना के बाद अपनी पारिवारिक रीति से व्रत खोलें। पति के हाथ से जल ग्रहण करने की परंपरा हो तो उसका पालन करें। इसके बाद प्रसाद और भोजन लें। पति दूर हों तो परिवार की स्वीकृत परंपरा के अनुसार स्वयं भी पारण किया जा सकता है।

पूजा का समय और स्थानीय परंपरा

तिथि, संध्या-पूजन का मुहूर्त और चंद्रोदय का समय हर वर्ष तथा स्थान के अनुसार देखें। कुछ परिवार कथा दोपहर में सुनते हैं। बादलों के कारण चंद्रमा न दिखे तो स्थानीय पंडित या परिवार के प्रचलित विधान का मार्गदर्शन लें।

॥ माता गौरी सबका मंगल करें ॥